ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

सूर के भ्रमरगीत की विषेशताएँ

KEY WORDS:

डॉ0 सुमन कुमारी

एसो0प्रोफेसर, हिन्दी राजकीय महाविद्यालय टनकपुर, चम्पावत।

सूर साहित्य का सर्वोपरि विषेशताओं में एक है उनका भ्रमरगीत का प्रणेता होना सूर का भ्रमरगीत काव्य हिन्दी साहित्य में सर्वथा अनूठा माना जाता है। उनसे प्रभावित होकर नंददास जैसे तथा अन्य अश्टछापी कवियों, भारतेन्दु, हरिऔध, रतनाकर, सत्यनारायण कविरत्न जैसे आधुनिक कवियों ने भ्रमरगीत काव्य की रचना की। किन्तु उनमें से कोई भी सूर की बराबरी न कर सका।

भ्रमरगीत से तात्पर्य–पहली बार श्रीमद् भागवत पुराण में भ्रमर का प्रसंग आया है, अतः श्रीमद्भागवत से भ्रमरगीत की परम्परा चली है। सूर में भी वहीं से यह विशय लिया गया है। निर्गुण पर सगण की विजय का विशय सूर भी उद्भावना है। भ्रमगीत के अनुसार उद्धव श्रीकृश्णा के संदेषवाहक बनकर ब्रज जाते है। वहॉ जाकर वे सभी को कृश्ण के ब्रहा रूप का उपदेष देते है। ब्रजबालायें उद्धव को एकान्त स्थान पर ले जाती है। वहीं एक भौरा उड़ता हुआ पहुँच जाता है, उसी के माध्यम से गोपियो ने अपने रोश खाझ क्रोध आदि के भाव व्यंग, उपालम्भ, कटुक्तियों आदि के रूप में व्यक्त किये है। भ्रमरगीत का षाब्दिक अर्थ है– भ्रमर को सम्बोधित करके कहे गये गीत। काव्य क्षैत्र में भ्रमर को धोखेबाजः निरंकुष और कली–कली पर मन्डराने वाला लोलुप–प्रेमी का प्रतीक माना गया है। गोपियॉ विरहवेदना से व्यथित होकर कृश्ण को इसी रूप में मानती है। श्री कृश्ण का भ्रमर के समान ष्यामह"। कृश्ण पीताम्बर धारण करते है और भ्रमर के षरीर पर पीत चिन्ह है। भ्रमर जिस प्रकार एक पुश्प का प्रेम ठुकरा कर दूसरे पुश्प पर चला जाता है उसी प्रकार कृश्ण गोपियों के प्रेम को ठुकराकर चले गये।

सूर के भ्रमरगीत में मौलिक और मार्मिक उद्भावना– श्रीमद् भागवत से उद्धत भ्रमरगीत परम्परा का अनुसरण सूर में हुआ है। सूर ने अपने भ्रमरगीत में निर्गुण का खण्डन तथा सगुण का मण्डन करते हुए प्रेम का प्रतिपादन किया है। वस्तुतः सूर के भ्रमरगीत में वियोग का मार्मिक चित्रण हुआ है। कृश्ण द्वारा संदेष लेकर भेजे गये उद्धव को गोपियों के भ्रमर, मधुकर, अलि आदि नामों से अभिहित कर उनके प्रति विविध प्रकार की कटुक्तियॉ व्यक्ति की है। इन उक्तियों के षिकार कृश्ण भी हुए है। सूर को इस वर्णन में पुरी सफलता मिली है। कुछ मार्मिक अंष प्रस्तुत है–

'मधुकर हम होहि वे बोली।
जिनको तुम तजि भजत प्रीति बिनु करत कुसुमरस केली।''

मधुकर यह कारे की जाति।
ज्यों जल भीन कमल पै अलि की त्यों नहि इनकी प्रीति।''

'प्रीति करि दीन्ही गरै छुरी जैसे बधिक चुगाय कपट–कन पाछे करत बुरी।''

प्रेमजनित वेदना का मार्मिक अंकन–गोपियों में कृश्ण, प्रेम,तृश्णा तीव्रतम रूप में है। वे निरन्तर उनके दर्षन के लिए तरसती है–
'अखियॉ हरिदरसन की भूखी।।
कैसे रहें रूप रस रॉची ये बतियॉ सुनि रूखी।''

यह छटपटाहट ही आन्तरिक वेदना का व्यापक रूप धारण करती है। यही कारण है कि गोपियॉ प्रेम पीड़ा के कारण बेचैन है। उनके अन्तस में श्रीकृश्ण टेढे होकर अड़ गये है, वे निकल नहीं पाते है। अतः उनके अभाव में वे जीवन से निराष हो जाती है तथा कहती हैं–

'उर में माखन चोर गड़े।
अब कैसे हुनहि निकसत ऊधौ है जु अड़े।''

इस प्रकार भ्रमर के माध्यम से गोपियों का विरह विविध प्रकार व्यंजित हुआ है। खीझ, रोश, क्रोध, आवेग, उपालम्भ अभिलाशा आदि के अनेक रूप सूर के भ्रमर गीत में अंकित है।

भ्रमरगीत एक उपालम्भ काव्य–भ्रमर गीत उपालम्भ काव्य है। इसमें गोपियों ने कृश्ण को बहुत उलाहने दिये है और उद्धव को भी अनेक प्रकार से भला–बुरा कहा है। यहॉ गोपियों की वियोग दषा दर्षनीय है। कृश्ण विरह से व्यथित ये गोपियॉ कृश्ण मिलने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं चाहती। सूर ने गोपियों के विरह का अत्यन्त कारूणिक मर्मस्पषी एवं सरस चित्रण किया है। इसमें 'भ्रमरगीत' के माध्यम से सूर ने एक तरफ निर्गुण–सगुण की विषद् और गम्भीर चर्चा की है, तो दूसरी और गोपियों की विरह–व्यथा का भी मार्मिक चित्रण किया है। गोपियों की वाग्विदग्धता, हदय स्पर्षिता, वाकचातुर्य और उपालम्भ की दृश्टि से सूर का भ्रमर गीत उच्चकोटि का काव्य है।

सगुण की स्थापना और निर्गुण की भर्त्सना– सूरदान ने भ्रमरगीत के माध्यम से सगुण–निर्गुण ब्रहा की आराधना और भक्ति की विषाद् विवेचना की है और अन्त में सगुण भक्ति को ही सर्वश्रेश्ठ प्रतिपादित किया है। उद्धव अपनी ओर से गोपियों को निर्गुण भक्ति एवं ब्रहा की सर्वव्यापकता का उपदेष देते है।

सुनहु गोपी हरि का सन्देष।

करि समाधि अन्तरगत ध्यावहु, यह उनको उपदेस।

कन्तु गोपियों को ज्ञान और योग का यह सन्देष अत्यन्त नीरस और पीड़ादायक लगता है। वे उद्धव को निर्गुण पथ कंटकपूर्ण ज्ञान पड़ा। वे सरल सगुण मार्ग के पथिक बन गये और सही निर्गुणोपासना पर सगुणोपासना की विजय ही सूर के भ्रमर गीत का उद्देष्य है।

सहायक ग्रन्थ–सूची–
1. भ्रमरगीत सार– रामचन्द्र षुक्ल
2. भँवरगीत– नन्ददास
3. भ्रमरदूत– सत्यनारायण कविरत्न
4. उद्धव षतक– जगन्नाथ दास रत्नाकर